2015 - 2016

पहल

एक कदम बदलाव की ओर...

दूध डेयरी शुरु करने की सफल गाथा

dsc
Development
Support
Centre

परिचयः

मध्य प्रदेश में धार जिले के कुक्षी तहसील में निसरपुर ब्लाक अंतर्गत कोण्दा गांव स्थित है। इस गांव की कुल आबादी में से ३३ प्रतिशत लोग आदिवासी है। यहां के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि और मजदूरी है। नहर से पानी की आपूर्ति होने के कारण यहाँ पर सिंचाई की पर्याप्त सुविधा है.

किसानों के हालात

मजदूरी और कृषि के अलावा गांव के लोग पशुपालन भी करते हैं। गाय, भैंस, बकरी इत्यादि की गाँव में कमी नही है। आमतौर पर यह माना जाता है कि जहाँ पर पशुधन है, वहां पर अतिरिक्त आमदनी से समृद्धि भी आती है लेकिन कोण्दा की कहानी अलग थी। यहाँ पर पशुधन तो था, ठीक-ठाक मात्र में दूध भी उत्पन्न होता था, लेकिन बाजार नजदीक न होने से दूध से पर्याप्त आमदनी नहीं हो पाती थी। यहां वे किसान भी दुःखी थे जिनको भरपूर मात्रा में दूध मिलता था क्योंकि, दूध तो है पर उसे बेचें कहां? यदि आसपास के नगरों में जाएं तो उसका उचित मूल्य मिले न मिले। जिनके पास सीमित मात्रा में पशुधन है, वो तो घर में व थोड़ी- बहुत मात्रा आस-पड़ोस को मामूली दामों में बेचकर काम चला लेते थे, लेकिन जिनके पास अधिक दूध था, वो परेशान थे, क्यूंकि आस- पड़ोस के बाज़ार में सही दाम मिल ही जाये, कोई निश्चित नहीं था, उपर से लाने व ले जाने का खर्चा जो आता था वो अलग। ऐसे में परेशान होकर कई लोगों ने अपने पशुधन बेच भी दिये।

बदलाव की पहल

जब डेवलपमेन्ट सपोर्ट सेन्टर (डीएससी) संस्था के विशेषज्ञों ने इन समस्यओं का अवलोकन किया तब इन सभी समस्याओ के निवारण हेतु ग्राम कोण्दा के निवासियों को उन्होंने अपने गांव में ही एक दूध डेयरी शुरू करने की सलाह दी। उन्होंने समझाया कि इससे किसान को दूध का सही भाव प्राप्त होगा, जिनके पास कम दूध है वे भी सही मूल्य पर आसानी से विक्रय कर सकेंगे एवं आय के रूप में कुछ पैसा कमा सकेंगे। अन्य ग्रामीण भी अपने घर की जरूरत हेतु आसानी से दूध प्राप्त कर सकेंगे।

इन सबको ध्यान में रख कर, ग्राम कोण्दा में डीएससी और सांची दूध संघ के सहयोग से दूध डेयरी प्रारंभ करने की योजना बनाई गई। इस निर्णय को अमल में लाने हेतु गांव में सर्वप्रथम एक संगठन का निर्माण किया गया और सभी की रजामंदी से २५ सदस्यों की समिति का गठन किया गया। इस समिति में सभी महिला सदस्य हैं । इसके अलावा इस समित में से १० सदस्यों की प्रमुख कार्यकारी मंडल का चुनाव किया गया।

प्रेरणा प्रवास

संगठन के सदस्यों के साथ डीएससी ने लगातार बैठकें करके प्रशिक्षण और प्रेरणा प्रवास करवाने का निश्चय किया। गुजरात की मेहसाणा डेयरी, आणंद डेयरी एवं गुजरात के डेयरी उद्योग से जुड़े कुछ प्रभावशाली महिला समूहों, किसानों के संगठनों को मिलने का कार्यक्रम बनाया गया। कुक्षी गांव का यह संगठन गुजरात के उन लोगों से मिला, जो अपनी अतिरिक्त आय हेतु लगातार प्रयास करते रहते हैं। यहां से उन्हें दूध डेयरी चलाने के बारे में अच्छा मार्गदर्शन मिला।

इस तरह ग्राम कोण्दा में दूध डेयरी की स्थापना करने की योजना बनाई गई, बैठकें हुई, सर्वे हुआ, किसानों को दूध संघ संबंधित जानकारी, नीति-नियम प्रदान किए गए और एक नई पहल के साथ दूध डेयरी की शुरुआत हुई।

दूध डेयरी का प्रभाव

डेयरी की शुरुआत १० सदस्यों से ३५ लीटर दूध को डेयरी में देकर हुई।
ग्राम कोण्दा में प्रारंभ में डेयरी की शुरुआत हुई थी तब दूध का भाव रूपये ५.२० प्रति फैट एवं लोकल भाव २५-३० रूपये लीटर था।
सांची दुध संघ के सहयोग से गांव में डेयरी से ग्रामीणों मे उत्साह देखा गया है एवं जीन किसानो ने कुछ वर्ष पहले गांव मे दुध की उचित बाजार व्यवस्था न होने के कारण अपने स्वयं के पशुधन को बेच दिया था वे एवं अन्य ग्रामिण भी पुनः पशु रखने लगे है। अब तक जहां दूध बेचने की समस्या थी वहीं अब तक मासिक रूपये १,६५,००० के हिसाब से पिछले ५/६ माह में ही रुपये ९,००,४४२ की आमदनी प्राप्त हो चुकी है।

डेयरी की तकनिकी जानकारी एवं कार्यप्रणाली

सुबह और शाम के समय दूध इकट्ठा कर डेयरी में एकत्रित किया जाता है। उसके

बाद सांची दूध संघ के वाहन द्वारा उसे बड़वानी दूध संघ केन्द्र पहुंचाया जाता है, वहां दूध का जी. टी. मूल्यांकन किया जाता है, इस प्रक्रिया के १० दिन बाद डेयरी को पेमेन्ट प्राप्त होता है। बात केवल दूध बेचने तक सीमित नहीं है बल्कि पानी के मिलावट के बगैर के शुद्ध दूध और उसकी गुणवत्ता की जांच करने के लिए लैक्टोमीटर, एसिड और फैट जांचने के लिए विभिन्न उपकरण, केन, तौल कांटा आदि चीज़ें भी कोण्दा दूध डेयरी को उपलब्ध करवायी गई। इसके अतिरिक्त दूध संघ द्वारा अन्य सहायता भी योजनाओं के रूप में प्रदान की जाती है जैसे कि सांची बीमारी सहायता योजना, आचार्य विद्या सागर गौसंवर्धन

योजना, कृषक भ्रमण कार्यक्रम, पशुओं के रखरखाव एवं स्वास्थ्य हेतु प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन आदि।

डेयरी शुरू होने से ग्रामीण लोगों को दूध का उचित मूल्य समय पर प्राप्त होने लगा, उनको दूध बेचने के लिए कहीं बाहर नहीं जाना पड़ता, समय समय पर ग्रामीण लोगों को सांची दूध डेयरी द्वारा पशुओं के रखरखाव व स्वास्थ्य संबंधित जानकारी उपलब्ध होती रहती है, ग्रामीण लोगों की आजिविका में सुधार हुआ है और आनेवाले समय में डेयरी द्वारा अन्य कई योजनाओं का लाभ मिलेगा जिससे उनकी जीवनशैली स्वस्थ-समृद्ध और उन्नत बन सके।

गांव में आए बदलाव आंकडों में

किसानों को बाज़ार भाव से प्रति लीटर लगभग रू.५० के भाव से भुगतान किया जाता है जब की डेयरी के आलावा स्थानीय मार्केट के अन्य व्यापारी उन्हें प्रति लीटर सिर्फ ३० से ३२ रूपये का ही भुगतान करते थे। दूध डेयरी का प्रति माह कलेक्शन ४७३९ लीटर है। अब तक जहां दूध बेचने की समस्या थी वहीं दूध डेयरी आने के बाद अब तक सालाना दूध की आवक करीब ५६००० लीटर हो चुकी है, मतलब की पिछले एक साल में दूध डेयरी का कारोबार करीब रु२८,००,००० तक हुआ चुका है।

सांची दुध संघ के सहयोग से गांव में डेयरी से ग्रामीणों मे उत्साह देखा गया है एवं जिन किसानो ने कुछ वर्ष पहले गांव मे उचित बाजार व्यवस्था न होने के कारण अपने के पशुधन को बेच दिया था वे ग्रामीण भी पुन: पशु रखने लगे है।

दूध डेयरी से लाभ

डेयरी से उन्हें निम्न लाभ होता है:

- ग्रामीणों को दूध का उचित मूल्य प्राप्त होता है।
- ग्रामीणों को दूध बेचने गांव के बाहर नहीं जाना पड़ता।
- सांची द्वारा ग्रामीणों को समय समय पर पशुओं के रख-रखाव एवं स्वास्थ्य संबंधित जानकारी प्राप्त होती है।
- ग्रामीणों को आनेवाले समय में डेयरी द्वारा शुरु की गई योजनाओं का लाभ भी मिलता है.
- ग्रामीणों की आजिविका में सुधार आया है।
- आने वाले समय में डेयरी द्वारा अन्य कई योजनाओं का लाभ भी मिलेगा जिससे उनकी जीवन शैली और स्वस्थ-समृद्ध और उन्नत बन सकेगी।

चुनौतियां

डेयरी की शुरुआत हुई तब कुछ समस्याएं सामने आयीं जो इस प्रकार है:

- प्रारंभ में दूध का कम मात्रा में संकलन होता था।
- डेयरी में कार्यरत सदस्यों को दूध मापने में कठिनाई होती थी जिसके चलते ग्रामीण की ओर से दिए गए दूध का सही मूल्य प्राप्त नहीं हो पाता था।
- ग्रामीणों के मन में डेयरी को लेकर अविश्वास की भावना थी।
- दूध में रहे फैट की जानकारी का अभाव होने से और अधिक मुनाफा कमाने के इरादे से ग्रामीण दूध में पानी मिलाते थे।
- दूध संघ केन्द्र, बडवानी एवं ग्राम डेयरी के फैट व जी.टी. की गणना में अन्तर के कारण ग्रामीणों में डेयरी के प्रति थोड़ी असंतोष की भावना थी।

दूध डेयरी हेतु आगे की कार्ययोजना:

दूध डेयरी द्वारा वर्तमान समय में ग्रामीणों में जागरुकता आने से और इसे भविष्य में वृहद रुप में संचालित करने हेतु कार्ययोजना तैयार की है:

- आनेवाले समय में डेयरी में दूध संकलन की मात्रा बढ़ाना है।
- वर्तमान में डेयरी में केवल ३० सदस्य है, भविष्य में पूरे गांव को जोड़ने की योजना है।
- डेयरी की विविध योजनाओं द्वारा गांव में पशुओं की संख्या में वृद्धि करके दूध क्रांति लाना है।
- दूध के व्यापार में अधिक से अधिक महिलाओं को शामिल करके ग्रामीणों की जीवन शैली में सुधार लाना है।
- सांची डेयरी में कुछ आगे की कार्ययोजना भी तय की गई है जिसमें मुख्य है दूध संकलन की मात्रा बढ़ाना, डेयरी से जूड़े सदस्यों की संख्या ३० से बढ़ाकर पूरे गांव को इससे जोड़ना, पशुओं की संख्या में वृद्धि करके श्वेत क्रांति लाना, अधिक से अधिक महिलाओं को जोड़ना, दूध शीत केन्द्र की स्थापना करना, दूध बेचनेवाले प्रत्येक किसान को उचित दाम मिले ऐसा प्रयत्न करना आदि।

उपसंहार:

ग्रामीण किसानों एवं गांव की महिलाओं को अतिरिक्त आय बढ़ाने के लिए कृषि के अलावा अन्य विकल्पों जैसे अच्छी गुणवत्ता के पशुधन से दूध प्राप्त कर दूध व्यवसाय के द्वारा आमदनी को बढाने का व्यवसाय करना चाहिए। इसके लिए डीएससी और उसके साथ अन्य अनेक संस्थान मार्गदर्शन देते रहते हैं जिससे ग्रामीणों की जीवनशैली में सुधार हो सकता है।

प्रतिवेदक : कु. सोनिका गुप्ता • **सहयोग :** श्री कमलेश रजत • **मार्गदर्शक :** श्री मोहन शर्मा

dsc
Development
Support
Centre

डीएससी का परिचय

डीएससी वर्ष १९९४ से प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन जैसे कि जल, जमीन और कृषि विकास से आजिविका वृद्धि हेतु ज्ञान आधारित सहयोग प्रदान करने का कार्य कर रही है ख इसके तहत राज्य व केन्द्र सरकार के विभिन्न विभागों तथा अन्य संस्थाओं के साथ जुड़कर नीति निर्धारण, क्षमतावर्धन, अनुसंधान, मूल्यांकन, नेटवर्किंग आदि माध्यम से कृषि में उपयुक्त एवं स्थायी विकास करने हेतु संस्था निरंतर प्रयत्नशील है। डीएससी संस्था गुजरात में मेहसाना, साबरकांठा, आणंद, अमरेली, राजकोट आदि जिलों में तथा मध्यप्रदेश के धार, अलीराजपुर, इन्दौर एवं देवास जिलों में ३00 से अधिक गांवों के लगभग एक लाख किसान परिवारों को वॉटरशेड, सहभागी सिंचाई प्रबंधन तथा कृषि व उद्यमिता विकास आदि कार्यक्रमो के ज़रिए सहयोग कर रही है। रतन दोराब जी टाटा ट्रस्ट, मुंबई; रॉयल बैंक ऑफ स्कॉटलैंड फाउंडेशन, भारत; व आई डी एच के वित्तीय सहयोग से संस्था परियोजना क्षेत्र में कृषि को चिरस्थायी बनाने व कृषि से आजिविका में वृद्धि करने हेतु कृत संकल्पित है.

संपर्कः

यदि आपको इस प्रकार की खेती के लिए अधिक जानकारी अथवा मार्गदर्शन चाहिए तो कृपया नीचे दिए पते पर संपर्क करें

डेवलपमेन्ट सपोर्ट सेन्टर, कुक्षी

मोबाईल नंबरः ०९४०७१२३९१३

कान्तिकुमार जैन के मकान में, होण्डा शो-रूम के सामने, अलिराजपुर रोड, कुक्षी, जिला धार, (म.प्र.)

डेवलपमेन्ट सपोर्ट सेन्टर, मनावर

मोबाईल नंबरः ०९४०७१३९३४३, मांगलिक भवन के पास, मेला मैदान रोड, मनावर- ४५४४४६, जिला- धार

Concept & Design by : www.madhyam.org